1789 ई० की फ्रांसीसी क्रान्ति का सार-संकलन

पवन कुमार
इतिहास विभाग, आर० एम० कॉलेज, हाजीपुर (वैशाली)।

क्रान्ति

यहाँ मैं फ्रांसीसी क्रान्ति के कारण और परिणाम का बिन्दुवार विवरण देने के पुराने ढर्रे से परहेज कर रहा हूँ। मैं यह मानकर चल रहा हूँ कि विद्यार्थी इतनी जानकारी विभिन्न किताबों से प्राप्त कर चुके होंगे या कर लेंगे। उपरोक्त बातों से इतर मैं यहाँ कुछ ऐसे बातों की चर्चा करना उचित समझूँगा इसकी चर्चा अबतक कम ही हुई है।

रामधारी सिंह 'दिनकर' की कृति 'संस्कृति के चार अध्याय' की प्रस्तावना में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने लिखा कि "इतिहास के अन्दर हम दो सिद्धान्तों को काम करते देखते हैं। एक तो सातत्य (निरंतरता) का सिद्धांत है और दूसरा परिवर्तन का।" इतिहासकार भी अतीत के किसी कालखण्ड में निरंतरता और परिवर्तन के तत्व को बारीकी से परखते हैं। तो सवाल उठता है कि फ्रांसीसी क्रान्ति के बाद क्या परिवर्तन हुए और क्या निरंतरता बना रहा?

फ्रांसीसी क्रान्ति के बाद जो एक महत्वपूर्ण कदम उठाया गया, वह था एसेंबली

2)

द्वारा मानव और नागरिक अधिकारों की घोषणा। इतिहास की यह पहली घटना थी, जब मनुष्य और नागरिक के कुछ नैसर्गिक अधिकारों की घोषणा की गई, जिसे कोई भी सत्ता छीन नहीं सकता था। साथ ही राज्य की "दैवीय उत्पत्ति सिद्धांत" को नकार कर कहा गया कि राज्य का जन्म व्यक्तियों के सामुहिक प्रयत्न का फल है और कानून सामान्य इच्छा (General will) की अभिव्यक्ति होती है। अबतक ~~राज्य~~ राज्य का ईश्वर द्वारा निर्मित और राजा को ईश्वर का प्रतिनिधि माना जाता था तथा राजा को ही कानून का स्रोत माना जाता था। मेरे दृष्टि में यह महत्वपूर्ण परिवर्तन था।

निरंतरता के तत्व को देखें तो क्रान्ति का चरित्र मध्यम-वर्गीय ~~था~~ और पितृसत्ता को पोषित करने वाला था। मध्यम-वर्ग ने क्रान्ति का नेतृत्व किया और मलाई चाटा, लेकिन जिन निम्न-वर्ग के लोगों का हवाला देकर ~~मध्य~~ मध्य वर्ग ने क्रान्ति में उन्हें शामिल किया, उनके स्थिति में क्रान्ति से बदलाव नहीं हुआ। इसी प्रकार जिस फ्रांस ने दुनिया में पहली बार ~~महिलाओं~~ मानव-अधिकारों की घोषणा की, उसी फ्रांस में महिलाओं को द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद में ~~जाकर~~ जाकर मताधिकार का अधिकार मिला।